3.

शोध प्रविधि एवं प्रक्रिया

अध्याय- 3

शोध प्रविधि एवं प्रक्रिया

3.1 प्रस्तावना

किसी भी प्रकार के शोध में सर्वप्रथम एवं सर्वाधिक महत्वपूर्ण चरण है, योजना बनाना जिस प्रकार किसी भवन निर्माता हेतु भवन निर्माण से पूर्व, भवन निर्माण हेतु ब्लूप्रिंट का निर्माण करता है तथा किसी शासकीय नीतियों को लागू करने से पूर्व की योजना का कार्य किया जाता है, जिससे कार्य सुरक्षित रूप से हो सके। इसी प्रकार किसी भी शोध से पूर्व, प्रक्रिया का निर्धारण आवश्यक है। जिससे शोध कार्य सुव्यवस्थित तथा संगठित बन सके।

शोध कार्य में कार्य करने की योजना है। शोध प्रक्रिया की रूपरेखा को शोध अभिकल्प कहा जाता है। इसका स्वरुप, समस्या एवं प्रकल्पना के निर्धारण के अनुसार ही होता है। यह स्पष्ट है कि योजना बनाकर शोध कार्य करने से समय, धन, श्रम, आदि का अनावश्यक अपव्यय बच जाता है। शोध अभिकल्प तथ्यों के संकलन एवं विश्लेषण से संबंधित देशों को इस तरह आयोजित करता है कि वह कार्य अवधि की बचत करती है ताकि शोध व्यवस्थित रुप से संपन्न हो सके।

कई शोध कर्ताओं द्वारा शोध की प्रक्रिया को निम्न भागों में विभाजित किया गया है-

1. शोध प्रक्रिया
2. प्रतिदर्श एवं प्रतिदर्श का चयन
3. उपकरणों का विकास
4. उपकरणों का प्रशासन
5. उपकरणों का स्कोरिंग पैटर्न

3.2 शोध प्रक्रिया-

समस्या की प्रकृति को ध्यान में रखते हुए वर्णनात्मक पद्धति के अंतर्गत सर्वेक्षण पद्धति का उपयोग किया गया है जिसमें गुणात्मक पद्धतियों के उपयोग से समस्या का समाधान करने का प्रयास किया गया है।

सर्वेक्षण विधि शोध करने की वह विधि है जिसके अंतर्गत वृहद पैमाने पर आंकड़े एकत्र किए जाते हैं और तकनीकों को प्रायः दो श्रेणियों में वर्गीकृत किया जाता है। मात्रात्मक विधि का उपयोग हम विस्तार पूर्वक अध्ययन करते हैं तथा गुणात्मक शोध में हम सामाजिक संबंधों के जटिल पक्षों के संबंध में विस्तार पूर्वक अध्ययन करते हैं।

3.3 प्रतिदर्श एवं प्रतिदर्श का चयन -

शोध के अच्छे परिणामों के लिए अच्छा प्रतिदर्श बहुत अधिक आवश्यक है। संपूर्ण जनसंख्या में किसी शोध को करना संभव नहीं है। अतः किसी भीं शोध में प्रतिदर्श का चयन बहुत अधिक आवश्यक हो जाता है। इस हेतु सोद्देश्य प्रतिदर्श का चयन किया गया है।

3.4 अध्ययन हेतु जनसंख्या -

जनसंख्या से हमारा तात्पर्य जनसंख्या के उस भाग से जिस के विचारों का प्रयोग हम इस शोध के लिए किया जा रहा है। इस शोध की जनसंख्या निम्न है-

1. दृष्टिबाधित विद्यार्थी जो सामान्य विद्यालयों में हो
2. किसी भी शासकीय विद्यालय के शिक्षक।

क्रमांक	प्रतिदर्श	संख्या
1.	दृष्टिबाधित विद्यार्थी	05
2.	शासकीय विद्यालय के शिक्षक।	20

3.5 विद्यालय का चुनाव-

इस प्रयोग हेतु शासकीय विद्यालय का चुनाव किया गया है।

3.6 उपकरणों का विकास

शोध हेतु प्रश्न का निर्माण शोधकर्ता द्वारा ही किया गया है। इस शोध कार्य हेतु दो प्रश्न पत्रों का निर्माण किया गया है-

1. शिक्षकों एवं विद्यालय इन प्रशासनिक अधिकारियों के लिए प्रश्नावली
2. दृष्टिबाधित विद्यार्थियों हेतु प्रश्नावली

प्रश्नावली का निर्माण शिक्षकों तथा दृष्टिबाधित विद्यार्थियों के समावेशन की स्थिति के लिए किया गया।

इन प्रश्नावलीयों का निर्माण का उद्देश्य, शिक्षकों तथा दृष्टिबाधित विद्यार्थियों की समावेशन के संबंध में जानकारी तथा विद्यालय में इनके समावेशन की स्थिति के अध्ययन के लिए किया गया है।

इस उद्देश्य को ध्यान में रखते हुए प्रश्न को कथन के आधार पर रखा गया है तथा इनमें विकल्प क्रमशः सहमत, अनिश्चित, असहमत दिए गए हैं। नीचे दी गई तालिका में प्रश्नावलियों के क्रमांक क्रमशः दिए गए हैं-

क्रमांक प्र.	प्रश्नावली	प्रश्नों की संख्या
1	शिक्षकों के लिए प्रश्नावली	20
2	दृष्टिबाधित विद्यार्थियों हेतु प्रश्नावली	15

3.7 उपकरणों का प्रशासन-

उपकरणों के प्रशासन हेतु निम्न प्रक्रिया का पालन किया-

विद्यालय पहुंचकर विद्यालय प्राचार्य की स्वीकृति से विद्यालय की दृष्टिबाधित विद्यार्थियों तथा शिक्षकों से संपर्क कर उनके समय की उपलब्धता अनुसार अपने अनुसंधान के विषय में बताकर उनसे प्रश्नावली भरवाई गईं तथा कई शिक्षकों के निवास स्थान पर प्रश्नावली पूर्ण कराई गई।

3.8 उपकरणों का स्कोरिंग पैटर्न-

शिक्षकों एवं विद्यार्थियों से प्रश्नावली में सहमत, असहमत, तथा अनिश्चित, स्थितियों से उत्तर प्राप्त किया गया तथा प्रश्नावली का विश्लेषण कर शोध के उस शोध का परिणाम प्राप्त किया गया।